भारत सरकार
श्रम और रोजगार मंत्रालय
राज्य सभा
तारांकित प्रश्न संख्या- *98
गुरूवार, 10 फरवरी, 2022/21 माघ, 1943 (शक)

बढ़ती बेरोजगारी

***98. श्री विशम्भर प्रसाद निषादः**

क्या **श्रम और रोजगार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या यह सच है कि देश में बढ़ती बेरोजगारी और समाप्त होती नौकरियों के कारण बेरोजगारों ने हताश होकर नौकरियों की तलाश बंद कर दी है;

(ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) विगत तीन वर्षों के दौरान सरकारी और निजी क्षेत्रों द्वारा प्रदान की गई नौकरियों का ब्यौरा क्या है; और

(घ) विगत तीन वर्षों के दौरान सरकारी और निजी क्षेत्र में समाप्त हुई नौकरियों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर
श्रम और रोजगार मंत्री
(श्री भूपेन्द्र यादव)

(क से घ): विवरण सदन के पटल पर रखा गया है।

"बढ़ती बेरोजगारी" के संबंध में श्री विशम्भर प्रसाद निषाद द्वारा पूछे गए राज्य सभा के दिनांक 10-02-2022 के तारांकित प्रश्न संख्या *98 के भाग (क) से (घ) के उत्तर में संदर्भित विवरण

(क) से (घ): रोजगार/बेरोजगारी से संबंधित आंकड़े राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ), सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (एमओएसपीआई) द्वारा आयोजित किए जाने वाले आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के माध्यम से 2017-18 से इकट्ठे किए जा रहे हैं। वर्ष 2019-20 की नवीनतम उपलब्ध वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार, 2017-18, 2018-19 एवं 2019-20 के दौरान सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र सहित सामान्य स्थिति के आधार पर 15 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के व्यक्तियों के लिए अनुमानित श्रम बल भागीदारी दर (एलएफपीआर), कामगार जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर) एवं बेरोजगारी दर (यूआर) वर्ष-वार नीचे दी गई है:

वर्षों	2017-18	2018-19	2019-20
कामगार जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर)* (% में)	46.8	47.3	50.9
श्रम बल भागीदारी दर (एलएफपीआर)* (% में)	49.8	50.2	53.5
बेरोजगारी दर (यूआर)* (% में)	6.0	5.8	4.8

***पीएलएफएस 2019-20**

पीएलएफएस सर्वेक्षण दर्शाता है कि 2017-18 से 2019-20 के दौरान देश में जहां एलएफपीआर और डब्ल्यूपीआर में वृद्धि हुई है, वहीं बेरोजगारी दर में गिरावट आई है।

मार्च, 2021 तक उपलब्ध शहरी क्षेत्रों के लिए त्रैमासिक पीएलएफएस रिपोर्ट का प्रयोग कर श्रम बाजार पर कोविड-19 महामारी के प्रभाव पर विश्लेषण करते हुए आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 में कहा गया है कि कोविड-19 के प्रकोप से पहले, एलएफपीआर, डब्ल्यूपीआर और यूआर के संदर्भ में शहरी श्रम बाजार में सुधार के संकेत दिखाई दिए थे। हालांकि, कोविड-19 महामारी के कारण, 2020-21 की पहली तिमाही में, शहरी क्षेत्र में बेरोजगारी दर बढ़कर 20.8 प्रतिशत हो गई। 2020-21 की बाद की तिमाहियों में अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार के साथ, सभी तीन श्रम बाजार संकेतक यानी एलएफपीआर, डब्ल्यूपीआर और यूआर ने तेजी से सुधार दिखाया। इस अवधि के दौरान यूआर धीरे-धीरे कम होकर 2020-21 की अंतिम तिमाही में शहरी क्षेत्रों के लिए 9.3 प्रतिशत तक पहुंच गई। वर्ष 2019-20 और 2020-21 (मार्च, 2021 तक) में शहरी क्षेत्रों के लिए एलएफपीआर, डब्ल्यूपीआर और यूआर का तिमाही अनुमान अनुबंध में दिया गया है।

इसके अलावा आर्थिक सर्वेक्षण, 2021-22 के अनुसार, वर्ष 2017-18, 2018-19 और 2019-20 के दौरान रोजगार की कुल अनुमानित संख्या क्रमशः 47.14, 48.78 और 53.53 करोड़ है।

सरकार ने अप्रैल, 2021 में अखिल भारतीय संस्थान आधारित त्रैमासिक रोजगार सर्वेक्षण (एक्यूईईएस) प्रारंभ भी किया है। जुलाई से सितंबर 2021 की अवधि हेतु त्रैमासिक रोजगार सर्वेक्षण (क्यूईएस) के दूसरे दौर के परिणाम के अनुसार, अर्थव्यवस्था के चयनित नौ क्षेत्रों में रोजगार बढ़कर 3.10 करोड़ हो गया जो कि छठी आर्थिक जनगणना (2013-14) में बताए अनुसार इन क्षेत्रों में कुल 2.37 करोड़ के मुकाबले, क्यूईएस के पहले दौर (अप्रैल-जून, 2021) में 3.08 करोड़ था।

*****

अनुबंध

राज्य सभा के दिनांक 10.02.2022 के तारांकित प्रश्न संख्या *98 के भाग (क) से (घ) के उत्तर में उल्लिखित अनुबंध

वर्तमान साप्ताहिक स्थिति (सीडब्ल्यूएस) पर शहरी क्षेत्र के लिए श्रम बल संकेतक (आयु: **15** और ऊपर) (प्रतिशत में)

पीएलएफएस सर्वेक्षण	**तिमाही**	**एलएफपीआर**	**डब्ल्यूपीआर**	**यूआर**
2019-20	जुलाई-सितंबर, 2019	47.3	43.4	8.3
	अक्टूबर - दिसंबर, 2019	47.8	44.1	7.8
	जनवरी-मार्च, 2020	48.1	43.7	9.1
	अप्रैल-जून, 2020	45.9	36.4	20.8
2020-21	जुलाई-सितंबर, 2020	47.2	40.9	13.2
	अक्टूबर-दिसंबर, 2020	47.3	42.4	10.3
	जनवरी-मार्च, 2021	47.5	43.1	9.3

स्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22

(<u>परिभाषाएं:</u> एलएफपीआर को श्रम बल में जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया जाता है। श्रम बल में ऐसे व्यक्ति शामिल हैं जो या तो काम कर रहे थे (नियोजित) या काम की तलाश में (बेरोजगार) हैं। डब्ल्यूपीआर को कुल आबादी में नियोजित व्यक्तियों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया जाता है। यूआर को श्रम बल में बेरोजगार व्यक्तियों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया जाता है)